Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ
وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۶﴾

(सूरः यूनुस **:18)**

अनुवाद : और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिसे चाहता है उसे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّيۡ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ وَعَلٰى عَبۡدِهِ الۡمَسِيۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक - 25

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

20 ज़ुल् हज्जा, 1445 हिज्री कमरी, 6 अहसान 1403 हिज्री शम्सी, 20 जून 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

अल्लाह की नाराज़गी से बचो और अपनी औलाद के मध्य इन्साफ़ करो।

(2585) हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदया क़बूल फ़रमाया करते थे और ख़ुद भी हदया भेजा करते थे।

(2586) नुमान बिन बशीर से रिवायत की कि उनके बाप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उनको लाए और कहा मैंने अपने इस बेटे को एक ग़ुलाम दिया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुमने अपने सब बेटों को इसी तरह दिया है जैसे इसको? उन्होंने कहा नहीं। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसको वापस ले लो।

(2587) हज़रत नुमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मेरे बाप ने एक अतीया मुझे दिया तो अम्र बिंत रवाहहओ ने कहा मैं उस वक़्त तक राज़ी नहीं हूँगा जब तक तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गवाह नहीं ठहराओ। इस पर वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा मैंने अपने इस बेटे को जो अम्र बिंत रवाह रज़ियल्लाहु अन्हु से है, एक अतिया दिया है और उसने मुझसे कहा है कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गवाह ठहराऊं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुमने अपने बाक़ी तमाम बेटों को इसी तरह दिया है। उन्होंने कहा नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की नाराज़गी से बचो और अपनी औलाद के मध्य इन्साफ़ करो। इस पर वे लौट आए और उन्होंने अपना अतीया वापस ले लिया।

(बुख़ारी किताबुल् हिबा)

★ ★ ★

हदीस में आया है कि दोज़ख़ पर एक ऐसा समय आएगा कि इस में एक आदमी भी बाक़ी नहीं रहेगा और नसीम-ए-सबा उसके दरवाज़ों को खटखटाएगी

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

इस्लाम की निसबत जो कहते हैं कि तलवार से फैला, यह बिल्कुल ग़लत है। इस्लाम ने तलवार उस वक़्त तक नहीं उठाई जब तक सामने तलवार नहीं देखी। क़ुरआन शरीफ़ में साफ़ लिखा है कि जिस किस्म के हथियारों से दुश्मन इस्लाम पर हमला करे, उसी किस्म के हथियार इस्तिमाल करो। महदी के लिए कहते हैं कि आकर तलवार से काम लेगा, यह सही नहीं। अब तलवार कहाँ है जो तलवार निकाली जाए। फिर अफ़सोस तो यह है कि बावजूद इसके कि मसीह उन लोगों के मुस्लिमात को स्वीकार कर लेगा और फ़रिश्तों के साथ आसमान से उतरेगा परंतु फिर भी इस पर कुफ़्र का फ़तवा दिया जाएगा, जैसा कि किताबों से साबित है बल्कि एक व्यक्ति उठकर कह देगा اِنَّ هٰذَا الرَّجُلَ غَيَّرَ دِيْنَنَا۔ हम चाहते हैं कि हमारी जमात के लोग इन दलायल से अवगत हों ताकि किसी महफ़िल में उनको शर्मिंदा न उठानी पड़े।

हमारा ईमान है कि दोज़ख़ में एक अरसा तक आदमी रहेगा, फिर निकल आवेगा। गोया जिनकी इस्लाह नबुव्वत से नहीं हो सकी, उनकी इस्लाह दोज़ख़ करेगी। हदीस में आया है कि दोज़ख़ पर एक ऐसा ज़माना आवेगा कि इस में एक आदमी भी बाक़ी नहीं रहेगा और नसीम सबा उसके दरवाज़ों को खटखटाएगी।

इसके इलावा क़ुरआन शरीफ़ ने बहिश्त के इनामात का वर्णन करके عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ कह दिया है और होना भी ऐसा ही चाहिए था क्योंकि अगर ऐसा नहीं होता तो उम्मीद न रहती और मायूसी पैदा होती। बहिश्त के इनामात की बे-इंतेहा दराज़ी को देख कर मुसर्रत बढ़ती है और दोज़ख़ के एक निर्धारित अरसा तक होने से ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल पर-उम्मीद पैदा होती है। (मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 11 और 14 ऐडीशन 2018 कादियान) ★ ★ ★

जब तक ख़ाना काअबा रहेगा मुस्लमानों की यकजहती भी क़ायम रहेगी हज दुनिया को यह पैग़ाम पहुँचाता है कि इस्लाम की रगों में अब भी ज़िंदगी का ख़ून दौड़ रहा है और अब भी मुस्लमानों की क़ौमी ज़िंदगी की रग फड़क रही है, यही कारण है कि इस्लाम ने नमाज़ और रोज़ा और ज़कात की तरह हज को भी एक ज़रूरी फ़रीज़ा क़रार दिया है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल् हज आयात 28 से 30 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इन आयात में अल्लाह तआला ने हज बैतुल्लाह का वर्णन फ़रमाया है जो एक अहम इस्लामी इबादत है और जिसके मुताबिक़ हर साल लाखों आदमी जिनमें से कोई किसी क़ौम का होता है और कोई किसी मुल्क का एक दूसरे के रस्म-ओ-रिवाज एक दूसरे की ज़बान और एक दूसरे की आदात इत्यादि से नावाक़िफ़ होते हुए मक्का मुकर्रमा में जमा होते हैं और अपने अमल से इस बात का इक़रार करते हैं कि इस्लामी तौहीद ने मुस्लमानों के दिलों को ऐसा मुत्तहिद कर दिया है कि बावजूद इख़तेलाफ़-ए-ज़बान, इख़तेलाफ़-ए-अक़ायद , इख़तेलाफ़-ए-रंग-ओ-नसल, इख़तेलाफ़-ए-ख़्यालात और इख़तेलाफ़-ए-हवा पानी के हम अल्लाह तआला की आवाज़ पर लबैक कह कर एक जगह पर जमा होने के लिए तैयार हैं। इसी तरह मुस्लमानों ने अपने अमल से ज़ाहेरी हज के इलावा यह भी साबित कर दिया है कि वे ख़ाना काबा की हिफ़ाज़त के लिए अपनी जानें क़ुर्बान करने के लिए तैयार रहते हैं और जब तक मुस्लमानों में यह रूह क़ायम रहेगी किसी दुश्मन की यह ताक़त नहीं होगी कि वे ख़ाना काबा की तरफ़ मुँह करे या मुस्लमानों की यकजहती को तोड़ सके क्योंकि जबतक ख़ाना काअबा रहेगा

शेष पृष्ठ 6 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

जिस दिन हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो और खुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों शहीद किए गए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुना गया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे

وَعَلَيْكُمَا السَّلَام और तुम दोनों पर भी सलामती हो

सरिया रजीअ के अमीर हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुआ की कि हे अल्लाह हमारे विषय में अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अवगत फ़र्मा दे

जब अज़ल और काराह के ये ग़द्दार लोग असफ़ान और मक्का के मध्य पहुंचे तो उन्होंने बनू लहयान को ख़ुफ़िया ख़ुफ़िया सूचना भिजवा दी कि मुस्लमान हमारे साथ आ रहे हैं तुम आ जाओ। जिस पर क़बीला बनू लहयान के दोसौ नौजवान जिनमें से एक सौ तीर-अंदाज़ थे मुस्लमानों का पीछा करने निकल खड़े हुए और मुक़ाम रजीव में उनको आ लिया

हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो का उत्तर सुनकर अबूसुफ़ियान बे-इख़्तियार बोला

"वल्लाह मैंने किसी व्यक्ति को किसी व्यक्ति के साथ ऐसी मुहब्बत करते नहीं देखा जैसी कि अस्हाब-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से है।"

हारिस की बेटी कहा करती थी कि ख़ुदा की कसम मैंने कभी ऐसा क़ैदी नहीं देखा जो ख़ुबेब से बेहतर हो और फिर कहने लगी कि अल्लाह की क़सम मैंने एक दिन उनको देखा कि अंगूर का गुच्छा उनके हाथ में है और वह उसे खा रहे हैं और वह ज़ंजीर में जकड़े हुए थे और उन दिनों मक्का में कोई फल भी नहीं था। कहती थीं यह अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ था जो उसने ख़ुबेब को दिया

सरिया रजीअ की दृष्टि से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी, सहाब-ए-कराम रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ुर्बानियों और नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़-ओ-वफ़ा का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 मई 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

सरिया रजीह का वर्णन हो रहा था। इसकी मज़ीद तफ़सील अहादीस और तारीख़ में जो वर्णन हुई है वह इस तरह है। सही बुख़ारी में रजीह की घटना के विषय में तफ़सीलात इस तरह वर्णन हुई हैं कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दस आदमी सरिया के तौर पर हालात मालूम करने के लिए भेजे और उन पर हज़रत आसिम बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर निर्धारित फ़रमाया। वह रवाना हुए यहां तक कि जब वे हदाह में थे और वे उसफ़ान और मक्का के मध्य है तो हुज़ैल की शाख़ जिन्हें बनू लहयान कहते थे, से उनका वर्णन किया गया तो इस मुख़ालिफ़ क़बीले से उन मुस्लमानों के लिए तक़रीबन दो सौ आदमी निकल खड़े हुए। वे सब तीर-अंदाज़ थे। वे लोग मुस्लमानों के निशानों के पीछे रगए यहां तक कि उन्होंने उनकी खजूरें खाने की जगह को पालिया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ये खजूरें मदीना से ज़ाद-ए-राह के तौर पर ली थीं। बनू लहयान ने पहचान के कहा ये यसरब की खजूरें हैं। वे उनके निशानात के पीछे गए। जब हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथियों ने उनको देखा तो उन्होंने एक टीले पर पनाह ली। इन लोगों ने उनको घेर लिया और उन्होंने उनसे कहा नीचे उतर आओ अर्थात् मुख़ालेफ़ीन ने कहा नीचे उतर आओ। तुम अपने आपको हमारे सपुर्द कर दो। तुम्हारे लिए अह्द-ओ-पैमान है। हम तुम में से किसी को क़तल नहीं करेंगे। सरिया के अमीर हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा जहां तक मेरा ताल्लुक़ है ख़ुदा की कसम मैं एक काफ़िर की पनाह में नहीं आऊँगा। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुआ की कि हे अल्लाह हमारे मुताल्लिक़ अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अवगत फ़र्मा दे।

इन लोगों ने, दुश्मनों ने फिर उन लोगों पर जो ये सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थे उन पर तीर चलाए और उन्होंने हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो को सात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो समेत क़तल कर दिया। तीन आदमी अह्द-ओ-पैमान पर उनके पास उतर आए। उनमें ख़ुबेब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो और इब्न-ए-दसेना रज़ियल्लाहु अन्हो और एक और व्यक्ति थे उनका नाम अब्दुल्लाह बिन तारिक़ था। मुख़ालेफ़ीन ने तीनों को क़ाबू कर लिया। उन्होंने अपने कमानों के तांत खोले और उनको बांध लिया। इस पर तीसरे व्यक्ति ने कहा यह पहली ग़द्दारी है। अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। निसन्देह उन लोगों में उस्वा है। उनकी मुराद शुहदा से थी। उन्होंने इस सहाबी को खींचा और उन्हें इस पर मजबूर किया कि वे उनके साथ चलें। उन्होंने इंकार कर दिया तो उन्होंने उन को भी शहीद कर दिया और वे हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत इब्ने दसेनह रज़ियल्लाहु अन्हो को ले गए यहां तक कि उनको मक्का में बेच दिया। हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो को बनू हारिस बिन आमिर बिन नौफ़ल बिन अबदे मुनाफ़ ने ख़रीद लिया और हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो ही थे जिन्हों ने हारिस बिन आमिर को बदर के दिन क़तल किया था। हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो के पास क़ैदी रहे। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी किताब अल् जिहाद वल् सैर باب هل يستأسر الرجل؟ ومن لم يستأسر... हदीस 3045)

जबकि बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ तो दस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की यह पार्टी जासूसी के लिए ही थी और छुपते छुपाते जा रही थी कि यसरब की गुठलियों को पहचान कर एक औरत ने शोर मचा दिया और दुश्मन ने उन पर हमला कर दिया लेकिन ज़्यादा-तर सीरत निगार ये वर्णन करते हैं कि यह पार्टी इर्द-गिर्द के हालात का जायज़ा लेने के लिए तैयार ही थी। अभी गई नहीं थी कि इस आने वाले वफ़द के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी पार्टी को रवाना कर दिया।

इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी तारीख़ की मुख़्तलिफ़ किताबों से जो अख़ज़ किया है इस में यही वर्णन फ़रमाया है कि इस पार्टी के साथ गए थे, लोगों के साथ गए थे इसलिए बुख़ारी या जिन कुतुब सीरत में उनके छुप कर सफ़र करने का वर्णन है वह रावियों की गलती मालूम होता है क्योंकि अब इस पार्टी को छिपने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि अब तो ये अज़ल और कुरह के लोगों के साथ जा रहे थे। हाँ ये ज़रूर क़ियास किया जा सकता है कि जब यह असफ़ान और मक्का के मध्य पहुंचे हैं तो अज़ल और कुरह के लोगों ने जो दरअसल एक साज़िश के तहत उन लोगों को लेकर आए थे यहां पहुंच कर वादा तौड़ते हुए और पहले से तय-शुदा मंसूबे के तहत बनू लहयान को इत्तिला कर दी होगी और वे दो सौ हमला आवरों के साथ वहां पहुंच गए।

बहरहाल बनू लहयान के दो सौ लोग जिनमें एक सौ माहिर तीर-अंदाज़ थे वे हम-ला-आवर हुए और उन्होंने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को घेर लिया। जब अमीर लश्कर हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथियों को उन लोगों के बारे में इलम हुआ तो वे लोग एक फ़द फ़द नामी पहाड़ी पर चढ़ गए। एक रिवायत में इस का नाम करदद वर्णन हुआ है। मुशरेकीन ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को घेर लिया और कहने लगे कि अगर तुम हमारी तरफ़ नीचे उतर आओ तो हम तुमसे अह्द-ओ-पैमान करते हैं हम किसी को भी क़तल नहीं करेंगे। अल्लाह की क़सम! निसन्देह हम तुम्हें क़तल करने का इरादा नहीं रखते। बस हमारा केवल यह इरादा है कि मक्का वालों से तुम्हारी वजह से कुछ हासिल करें। (सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 40 दारुल कुतुब इलमिया बेरूत, लुबनान)

इस पर हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि ख़ुदा की क़सम मैं किसी काफ़िर की पनाह लेने के लिए नहीं उत्तरूँगा। मैं ने नज़र मान रखी है कि ज़िंदगी-भर किसी मुशरिक की पनाह क़बूल नहीं करूँगा। उनके दूसरे दोनों साथियों का जवाब भी यही था कि हम हरगिज़ मुशरिक का अह्द-ओ-पैमान क़बूल नहीं करेंगे। इस अवसर पर हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो अल्लाह तआला से दुआ की। "اَللّٰهُمَّ اَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ" । हे ख़ुदा अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तो हमारे हालात से अवगत कर दे। बहरहाल फिर दोनों की बाक़ायदा लड़ाई शुरू हो गई।

(उद्धारित सीरत इन्साईक्लो पीडीया जल्द 6 पृष्ठ 453प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़1434 हि)

लश्कर के अमीर हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो आपनी जवाँमर्दी और बहादुरी के जोहर दिखा रहे थे और साथ-साथ यह अशआर पढ़ रहे थे जिनका अनुवाद यह है कि मैं किस वजह से हथियार डालूं? हालाँकि मैं बहादुर और माहिर तीर-अंदाज़ हूँ और मेरी कमान में बड़ी मज़बूत तांत लगी हुई है। इस कमान के पहलू से लंबे चौड़े तेज़ धार तीर तेज़ी से निकलते हैं। मौत बरहक़ है और ज़िंदगी की कोई हक़ीक़त नहीं है। अल्लाह तआला ने जो कुछ मुक़द्दर कर दिया है वे आदमी पर नाज़िल हो कर रहेगा। इन्सान को अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है। अगर मैं तुमसे न लड़ूँ तो मेरी माँ मुझे गम पाए। यह उन शेरों का अनुवाद है। समस्त सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो बड़ी बहादुरी और दिलेरी से दुश्मन के सामने डट गए, उनका मुक़ाबला करते रहे।

हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो दुशमनों पर तीर बरसाने लगे यहाँ तक कि सारे तीर ख़त्म हो गए। फिर नेज़ा थाम कर मुक़ाबला करते रहे। नेज़ा भी टूट गया और केवल तलवार बाक़ी रह गई। जब उन्हें अपनी शहादत का यक़ीन हो गया तो अपने सत्तर के मुताल्लिक़ ख़तरा लाहक़ हुआ क्योंकि दुश्मन जिसे शहीद करते थे उस की लाश को रौंदते और निर्वस्त्र कर देते थे। उस वक़्त उन्होंने अपने ख़ुदा से यूं दुआ की। اَللّٰهُمَّ حَمَيْتُ دِيْنَكَ أَوَّلَ نَهَارِيْ فَاحْمِ لِلَحْمِيْ آخِرَهٗ कि हे अल्लाह मैंने दिन के शुरू से तेरे दीन की हिफ़ाज़त की है। अब दिन के आख़िर में मेरे जिस्म की हिफ़ाज़त तू फ़रमाना। यह दुआ करके फिर लड़ाई में मशग़ूल हो गए। तलवार के दस्ते से भी दो आदमियों को शदीद ज़ख़मी और एक आदमी को क़तल कर दिया। फिर पैग़ाम-ए--अजल आ पहुंचा और जाम-ए-शहादत नोश फ़र्मा गए और यूं अपने बाक़ी छः साथियों समेत शहादत के अज़ीम मन्सब पर फ़ाइज़ हो गए।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 140 मतबूआ बज़म-ए-इक़बाल लाहौर2022 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस वाक़िया का वर्णन करते हुए लिखा है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिफ़र सन् 4 हिज्री में अपने दस सहाबियों की एक पार्टी तैयार की और उन पर आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर निर्धारित फ़रमाया और उन को यह हुक्म दिया कि वे ख़ुफ़िया ख़ुफ़िया मक्का के क़रीब जाकर क़ुरैश के हालात दरयाफ़त करें और उनकी कार्यवाईयों और इरादों से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला दें। लेकिन अभी यह पार्टी रवाना नहीं हुई थी कि क़बायल अज़ल और कुरह के चंद लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हमारे क़बायल में बहुत से आदमी इस्लाम की तरफ़ मायल हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कुछ आदमी हमारे साथ रवाना फ़रमाएं जो हमें मुस्लमान बनाएँ और इस्लाम की तालीम दें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी यह ख़ाहिश मालूम करके ख़ुश हुए और वही पार्टी जो सूचना देने के लिए तैयार की गई थी उनके साथ रवाना फ़र्मा दी। लेकिन दरअसल जैसा कि बाद में मालूम हुआ ये लोग झूठे थे और बनू लहयान के कहने पर मदीना में आए थे जिन्हों ने अपने रईस सुफ़ियान बिन ख़ालिद के क़तल का बदला लेने के लिए यह चाल चली थी कि इस बहाना से मुस्लमान मदीना से निकलें तो उन पर हमला कर दिया जाए और बनू लहयान ने इस ख़िदमत के मुआवज़ा में अज़ल और कुरह के लोगों के लिए बहुत से ऊंट इनाम के तौर पर निर्धारित किए थे। जब अज़ल और कुरह के ये ग़द्दार लोग उसफ़ान और मक्का के मध्य पहुंचे तो उन्होंने बनू लहयान को ख़ुफ़िया ख़ुफ़िया इत्तिला भिजवा दी कि मुस्लमान हमारे साथ आ रहे हैं तुम आ जाओ। जिस पर क़बीला बनू लहयान के दो सौ नौजवान जिनमें से एक सौ तीर--अंदाज़ थे मुस्लमानों के तआक़ुब में निकल खड़े हुए और मुक़ाम रजीव में उनको आ दबाया।

दस आदमी दो सौ सिपाहियों का क्या मुक़ाबला कर सकते थे, लेकिन मुस्लमानों को हथियार डालने की तालीम नहीं दी गई थी। फ़ौरन ये सहाबी एक क़रीब के टीला पर चढ़ कर मुक़ाबला के लिए तैयार हो गए। कुफ़्फ़ार ने जिनके नज़दीक धोखा देना कोई बुरा कार्य नहीं था उनको आवाज़ दी कि तुम पहाड़ी पर से नीचे उतर आओ हम तुमसे पुख़्ता अह्द करते हैं कि तुम्हें क़तल नहीं करेंगे। आसिम ने जवाब दिया कि "हमें तुम्हारे अहदो पैमान का कोई एतबार नहीं है हम तुम्हारी इस ज़िम्मेदारी पर नहीं उतर सकते।" और फिर आसमान की तरफ़ मुँह उठा कर कहा। हे ख़ुदा तू हमारी हालत को देख रहा है। अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमारी इस हालत से सूचना पहुंचा दे।" उद्देश्य आसिम और इस के साथियों ने मुक़ाबला किया। अंततः लड़ते--लड़ते शहीद हुए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 513-514)

हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश की ख़ुदाई हिफ़ाज़त किस तरह हुई? जो पहले उन्होंने दुआ की थी नाँ कि अल्लाह तआला मेरी नाश की हिफ़ाज़त कर। इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो मज़ीद लिखते हैं कि इसी वाक़िया रजीव के विषय में यह रिवायत भी आती है कि जब क़ुरैश मक्का को यह इत्तिला मिली कि जो लोग बनू लहयान के हाथ से रजीव में शहीद हुए थे उनमें आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। तो चूँकि आसिम ने बदर के अवसर पर क़ुरैश के एक बड़े रईस को क़त्ल किया था, इस लिए उन्होंने रजीव की तरफ़ ख़ास आदमी रवाना किए और उन आदमियों को ताकीद की कि आसिम का सिर या जिस्म का कोई अंग काट कर अपने साथ लाएंगे ताकि उन्हें तसल्ली हो और उनका जज़बा इंतेक़ाम संतुष्टि पाए। एक और रिवायत में आता है कि जिस व्यक्ति को आसिम ने क़तल किया था उस माँ "सुलाफ़ा बिंत साद" ने यह नज़र मानी थी कि वह अपने बेटे के क़ातिल की खोपड़ी में शराब डाल कर पिएगी और उसने यह इनाम निर्धारित किया था कि जो उस की खोपड़ी लाएगा उसको सौ ऊंट दिए जाऐंगे। इतनी ज़्यादा उनमें इंतेक़ाम की और ग़ज़ब की आग थी लेकिन ख़ुदाई तसर्रुफ़ ऐसा हुआ कि ये लोग वहां पहुंचे तो क्या देखते हैं कि ज़ंबूरों और शहद की नर मक्खीयों के झुण्ड के झुण्ड आसिम की लाश पर डेरा डाले बैठे हैं और किसी तरह वहां से उठने में नहीं आते। इन लोगों ने बड़ी कोशिश की कि ये ज़ंबूर और मक्खियां वहां से उड़ जाएं परंतु कोई कोशिश कामयाब नहीं हुई। आख़िर मजबूर हो कर ये लोग ख़ायब वख़ासिर वापस लौट गए। इस के बाद जल्द ही बारिश का एक तूफ़ान आया और आसिम की लाश को वहां से बहा कर कहीं का कहीं ले गया। लिखा है कि आसिम ने मुस्लमान होने पर यह अह्द किया था कि आइन्दा वे हर किस्म की मुशरिकाना चीज़ से क़तई परहेज़ करेंगे यहाँ तक कि मुशरिक के साथ छूएंगे भी नहीं। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को जब उनकी शहादत और इस वाक़िया की इत्तेला हुई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे

कि ख़ुदा भी अपने बंदों के जज़बात की कितनी पासदारी फ़रमाता है। मौत के बाद भी उसने आसिम के अह्द को पूरा करवाया और मुशरेकीन के छूने से उन्हें सुरक्षित रखा।"

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 516)

(अल् तबकातुल् कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 352 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(अल् मवाहिबुल दुनिया भाग प्रथम पृष्ठ 424 प्रकाशन अल् मकतब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो को हमी्युल् दुबर भी कहा जाता है अर्थात् वह जिसे भिड़ों या शहद की मक्खीयों के ज़रीया बचाया गया। अल्लाह तआला ने मौत के बाद भिड़ों के ज़रीया उनकी हिफ़ाज़त की। फिर हज़रत मुअत्तिब़ बिन ऊबेद रज़ियल्लाहु अन्हो दूसरे मज़लूमों की शहादत का वर्णन है। हज़रत मुअत्तिब बिन ऊबेद रज़ियल्लाहु अन्हो लड़ते-लड़ते शदीद ज़ख़मी हो गए। दुश्मनों ने इन तक रसाई हासिल करके उन्हें शहीद कर दिया। उनके इलावा पाँच और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो भी इसी तरह मर्दानावार लड़ते-लड़ते दुश्मन के तीरों की ज़द में आकर शहीद हो गए। इस तरह कल सात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हो गए। अब सिर्फ तीन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो रह गए थे हज़रत ख़ुबेब बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ैद बिन दसीनह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ रज़ियल्लाहु अन्हो।

(अल् असाबा भाग 3 पृष्ठ 461 उद्धृत दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 454 प्रकाशन दारुससलाम रियाज़ 1434 हि)

दुश्मनों ने इन तीनों सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से अह्द-ओ-पैमान किया कि हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे और तुम्हें अमान देते हैं। तुम अपने आपको हमारे हवाले कर दो। इस पर वे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो पहाड़ी पर से उनकी तरफ़ उतर आए। जब मुख़ालेफ़ीन ने इन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो पर क़ाबू पा लिया तो उन्होंने अपनी कमानों की अर्थात् मुख़ालेफ़ीन ने अपनी कमानों की तांतों को खोला और सहाबा को उनसे बांध दिया। इस पर हज़रत अबदुल्लाह बिन तारिक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यह पहली बद अहदी है। अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। इन शहीद होने वालों की इक़तेदा ही मुझे पसंद है। मुख़ालेफ़ीन ने ज़बरदस्ती उनको खींचना चाहा बहुत कोशिश की कि साथ चलें लेकिन अब्दुल्लाह बिन तारिक़ ने ऐसा नहीं किया तो उन्होंने अब्दुल्लाह को भी शहीद कर दिया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 41 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत, लुबनान)

कुछ रिवायात के मुताबिक़ मुख़ालेफ़ीन इन तीनों अस्हाब को क़ैदी बना कर मक्का की जानिब रवाँ-दवाँ थे। वे उन्हें मक्का वालों के हाथ बेचना चाहते थे। जब यह क़ाफ़िला मक्का मुकर्रमा से 22 किलो मीटर दूर शुमाल की जानिब वाक़्य मररू ज़हरान के स्थान पर पहुंचा तो हज़रत अबदुल्लाह बिन तारिक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने हाथ खोल लिए और तलवार सौंत कर मुक़ाबला करने के लिए कमर-बस्ता हो गए। जब दुश्मनों ने ऐसा जज़बा जिहाद देखा तो फ़ौरन पीछे हट गए और संगबारी करने लगे यहाँ तक कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन तारिक़ को शहीद कर दिया। उनकी क़ब्र मररू ज़हरान ही में है।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 141प्रकाशन बज़म-ए-इक़बाल लाहौर2022 ई.)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि "जब सात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो मारे गए और सिर्फ ख़ुबेब बिन अदी और ज़ैद बिन दसिना और एक और सहाबी बाक़ी रह गए तो कुफ़्फ़ार ने जिनकी असल ख़ाहिश उन लोगों को ज़िंदा पकड़ने की थी फिर आवाज़ देकर कहा कि अब भी नीचे उतर आओ। हम वादा करते हैं कि तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचाएंगे। अब की दफ़ा यह सादा-लौह मुस्लमान उनके फंदे में आकर नीचे उतर आए, परंतु नीचे उतरते ही कुफ़्फ़ार ने इन को अपनी तीर कमानों की तंदियों से जकड़ कर बांध लिया। इस पर ख़ुबेब और ज़ैद के साथी से जिनका नाम तारीख़ में अब्दुल्लाह बिन तारिक़ वर्णित हुआ सब्र न हो सका और उन्होंने पुकार कर कहा। "यह तुम्हारी पहली बद अहदी है"और नहीं मालूम तुम आगे चल कर क्या करोगे और अब्दुल्लाह ने उनके साथ चलने से इंकार कर दिया। जिस पर कुफ़्फ़ार थोड़ी दूर तक तो अब्दुल्लाह को घसीटते हुए और ज़िद-ओ-कूब करते हुए ले गए और फिर उन्हें क़तल कर के वहीं फेंक दिया और चूँकि अब उनका इंतेक़ाम पूरा हो चुका था। वे क़ुरैश को ख़ुश करने के लिए नीज़ रुपय की लालच से ख़ुबेब और ज़ैद को साथ लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हो गए। वहां पहुंच कर उन्हें क़ुरैश के हाथ फ़रोख़त कर दिया। इसलिए ख़ुबेब को तो हारिस बिन आमिर बिन नौफ़ल के लड़कों ने ख़रीद लिया क्योंकि ख़ुबेब ने बदर की जंग में हारिस को क़तल किया था। और ज़ैद को सफ़वान बिन अमय ने ख़रीद लिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 514)

हज़रत ख़ुबेब बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ैद बिन दसिना रज़ियल्लाहु अन्हो को मुशरेकीन ने क़ैद कर लिया और उन्हें मक्का साथ ले गए। मक्का पहुंच कर इन दोनों सहाबा को फ़रोख़त कर दिया गया। हारिस बिन आमिर के बेटों ने जैसा कि पहले वर्णन हुआ है हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़रीदा था ताकि वह अपने बाप हारिस के क़तल का बदला ले सकें जिसे बदर के रोज़ ख़ुबेब ने क़तल किया था। इब्न-ए-इसहाक़ के मुताबिक़ हुजीर बिन अबू अहिअब तमी ने हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़रीदा था जो हारिस की औलाद का हलीफ़ था। इस से हारिस के बेटे अक़बा ने हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़रीदा था ताकि अपने बाप के क़तल का बदला ले सके। यह भी कहा गया है कि उक़बा बिन हारिस ने हज़रतख़ु बे ब रज़ियल्लाहु अन्हो को बनू नजार से ख़रीदा था। यह भी कहा गया है कि अबू अहिब, अकरम बिन अबू जहल, अख़नस बिन शुरेक, उबैदा बिन हकीम, अमय बिन अबू उत्बा के बेटों ने और सफ़वान बिन उमय्या ने मिलकर हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़रीदा था। ये सब वे अफ़राद थे जिनके पूर्वज ग़ज़व-ए-बदर में क़तल किए गए थे। इन सबने हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़रीद कर उक्बा बिन हारिस को दे दिया था जिसने उन्हें अपने घर में क़ैद कर लिया।

(अल् इसतेयाब भाग 2 पृष्ठ 442-440 दारुल जलील बेरूत 1992 ई.)

इब्ने हशशाम कहते हैं कि उन्होंने इन दोनों अर्थात् हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ैद बिन दसनह रज़ियल्लाहु अन्हो को हुज़ैल के इन क़ैदियों के बदला में बेचा जो मक्का में थे। एक रिवायत में है कि हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को सोने के एक मिस्क़ाल के बदले में बेचा गया और एक क़ौल के मुताबिक़ पचास ऊंटों के बदला में वह बेचे गए और हज़रत ख़ुबेब को भी पचास ऊंटों के बदला में बेचा गया। कुछ रिवायात के मुताबिक़ हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो को सौ ऊंटों के बदला में और एक रिवायत के मुताबिक़ उन्हें इसी मिस्क़ाल सोने के इव्ज़ फ़रोख़त किया गया। कहा जाता है कि इन में चंद लोग क़ुरैश के शरीक हुए और वे इन दोनों अर्थात् हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो और ज़ैद बिन दसिना रज़ियल्लाहु अन्हो को लेकर हुर्मत वाले महीने ज़ुल् क़ादा में दाख़िल हुए और उनको क़ैद में रखा यहां तक कि हुर्मत वाले महीने गुज़र गए।

(इम्ता उल् अस्मा भाग 13 पृष्ठ 275 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 142 प्रकाशन बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 41 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

पिछले ख़ुत्बा में मैं हुर्मत वाले महीनों के बारे में तफ़सील से बेहस वर्णन कर चुका हूँ। इब्न-ए-इसहाक़ और इब्न-ए-साद वर्णन करते हैं कि हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को सफ़वान बिन अमय ने ख़रीदा था ताकि अपने बाप अमय बिन खलफ के बदले क़तल करे। सफ़वान बाद में मुस्लमान हो गया था। उसने उनको बनू जुमह के लोगों के पास क़ैद कर रखा था और यह भी कहा जाता है कि अपने ग़ुलाम निसवान के पास रखा। अतः जब हुर्मत वाले महीने ख़त्म हो गए तो सफ़वान ने अपने ग़ुलाम निसवान को तन्ईम की तरफ़ भेजा। तन्ईम मक्का से मदीना और शाम की सिम्त में तीन या चार मील पर एक मुक़ाम है। बहरहाल उनको हर्म से निकालाता कि उनको क़तल करें और क़ुरैश की जमाअत भी जमा हो गई। उन में अबूसुफ़ियान बिन हरब भी था। जिस वक़्त उनको क़तल करने के लिए लाया गया तो अबू सुफ़ियान ने उनसे कहा हे ज़ैद मैं तुझे अल्लाह की क़सम देता हूँ। क्या तू यह पसंद करता है कि तेरी जगह उस वक़्त हमारे पास मुहम्मद हों और हम उसकी गर्दन मार दें और तू अपने अहल-ओ-अयाल में रहे? हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा अल्लाह की क़सम मुझे इतना भी पसंद नहीं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त जिस मकान में हैं वहां उनको कांटा भी चुभे जो उन को तकलीफ़ दे और में अपने अहल-ओ-अयाल में रहूं। इस पर अबूसुफ़ियान ने कहा मैं ने लोगों में से किसी को नहीं देखा कि वे किसी से ऐसी मुहब्बत करता हो जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के अस्हाब मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से मुहब्बत करते हैं।

फिर हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को निस्तास ने क़तल कर दिया। एक रिवायत के मुताबिक़ उसके साथ क़ुरैश के कुछ अन्य लोगों ने मिलकर उनको तीर मारना शुरू

किए यहां तक कि वे शहीद हो गए। बाद में यह निस्तास जो क़ातिल था यह भी मुस्लमान हो गया था। इब्न-ए-उक्बा ने वर्णन किया है कि ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुबेब दोनों एक ही दिन शहीद किए गए थे। जिस दिन दोनों शहीद किए गए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुना गया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे कि وَعَلَيْكُمَا السَّلَام और तुम दोनों पर भी सलामती हो।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 6 पृष्ठ 42 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(शरह जरक़ानी भाग 2 पृष्ठ 493 बाअस अलर्जीउ प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1998 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 77 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस घटना को वर्णन किया है। कहते हैं कि "सफ़वान बिन अमय अपने क़ैदी ज़ैद बिन दसना को साथ लेकर हर्म से बाहर गया। क़ुरैश के सरदारों का एक मजमा साथ था। बाहर पहुंच कर सफ़वान ने अपने गुलाम नस्तास को हुक्म दिया कि ज़ैद को क़तल कर दो। नस्तास ने आगे बढ़ कर तलवार उठाई। उस वक़्त अबूसुफ़ियान बिन हर्ब रईस मक्का ने जो तमाशाइयों में मौजूद था आगे बढ़कर ज़ैद से कहा। "सच्च कहो क्या तुम्हारा दिल यह नहीं चाहता कि इस वक़्त तुम्हारी जगह हमारे हाथों में मुहम्मद होता जिसे हम क़तल करते और तुम बच जाते और अपने परिवार वालों में ख़ुशी के दिन गुज़ारते?' ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो की आँखों में ख़ून उतर आया और वह ग़ुस्से में बोले। अबूसुफ़ियान तुम यह क्या कहते हो? ख़ुदा की क़सम मैं तो यह भी नहीं पसंद करता कि मेरे बचने के बदले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पांव में एक कांटा तक चुभे।' अबूसुफ़ियान बे-इख़्तियार हो कर बोला। ख़ुदा की कसम मैंने किसी व्यक्ति को किसी व्यक्ति के साथ ऐसी मुहब्बत करते नहीं देखा जैसी कि अस्हाब-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से है। इस के बाद नस्तास ने ज़ैद को शहीद कर दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ : 516)

इस क़तल के वाक़िया के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो लखते हैं : "इस तमाशा को देखने वालों में अबूसुफ़ियान रईस मक्का भी था। वह ज़ैद की तरफ़ मुतवज्जा हुआ और पूछा कि क्या तुम पसंद नहीं करते कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारी जगह पर होता और तुम अपने घर में आराम से बैठे हो? ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने बड़े ग़ुस्से से जवाब दिया कि अबूसुफ़ियान तुम क्या कहते हो? ख़ुदा की क़सम मेरे लिए मरना इस से बेहतर कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पांव को मदीना की गलियों में एक कांटा भी चुभ जाए। इस फिदाईत से अबूसुफ़ियान प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रह सका और उसने हैरत से ज़ैद की तरफ़ देखा और फ़ौरन ही दबी ज़बान में कहा कि ख़ुदा-गवाह है कि जिस तरह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथी मुहब्बत करते हैं मैंने नहीं देखा कि कोई और व्यक्ति किसी से मुहब्बत करता हो।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 262-263)

एक सीरत निगार हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वर्णन करते हुए लिखता है कि हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो हुजेर बिन अबू हिबाब की तहवील में थे और हारिस बिन नौफ़ल के बेटों के घर में रह रहे थे। उन्होंने हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ जारिहाना सुलूक किया। उनके इस बुरे सुलूक को देखकर हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कोई सम्मानित क़ौम अपने क़ैदी से इस तरह का रवैय्या नहीं रखती। बहरहाल काफ़िरों के दिल पर इस का बहुत प्रभाव हुआ। इसके बाद उन्होंने उनसे अच्छा सुलूक करना शुरू कर दिया।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 144 प्रकाशन बज़म-ए-इक़बाल लाहौर 2022 ई.)

इब्न-ए-शहाब कहते थे कि अबैदुल्लाह बिन इयाज़ ने मुझे बताया कि हारिस की बेटी ने उनसे वर्णन किया कि जब काफ़िरों ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि उन्हें मार डालें तो ख़ुबेब ने उनसे उस्तुरा मांगा कि उसे इस्तिमाल करें। इसलिए उसने उन्हें उस्तुरा दे दिया। हारिस की बेटी कहती है कि उस वक़्त मेरी बे-ख़बरी की हालत में मेरा एक बच्चा ख़ुबेब के पास आया और उन्होंने उस को ले लिया। उसने कहा मैंने ख़ुबेब को देखा कि वह बच्चे को अपनी रान पर बिठाए हुए है और उस्तरा उसके हाथ में है। मैं यह देखकर इतना घबराई कि ख़ुबेब ने घबराहट को मेरे चेहरे से पहचान लिया और बोले। तुम डरती हो कि मैं उसे मार डालूँगा? मैं तो ऐसा नहीं हूँ कि यह करूँ। मुस्लमान वादे की पाबंदी करते हैं और ज़ुलम नहीं करते।

हारिस की बेटी कहा करती थी कि ख़ुदा की कसम मैंने कभी ऐसा क़ैदी नहीं देखा जो ख़ुबेब से बेहतर हो और फिर कहने लगी कि अल्लाह की क़सम मैंने एक दिन उन को देखा कि अंगूर का ख़ोशा उनके हाथ में है और वह उसे खा रहे हैं और वह ज़ंजीर में जकड़े हुए थे और उन दिनों मक्का में कोई फल भी नहीं था। कहती थीं यह अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ था जो उसने ख़ुबेब को दिया।

जब क़ुरैश उन्हें हर्म से बाहर ले गए कि ऐसी जगह क़तल करें जो हर्म नहीं है तो ख़ुबेब ने उनसे कहा मुझे इजाज़त दो कि मैं दो रकात नमाज़ पढ़ लूं। उन्होंने उनको इजाज़त दे दी। उन्होंने दो रकात नमाज़ पढ़ी और कहने लगे। अगर तुम यह ख़्याल करते कि मैं इस वक़्त जिस हालत में नमाज़ में हूँ यह घबराहट का नतीजा है तो मैं ज़रूर यह नमाज़ लंबी पढ़ता। अर्थात् अगर तुम्हें वहम होता मेरा कि मैं शायद बचने के लिए लंबी नमाज़ पढ़ रहा हूँ तो मैं ज़रूर यह नमाज़ लंबी पढ़ता। मैंने तो इसलिए नमाज़ लंबी नहीं पढ़ी, छोटी पढ़ी है कि तुम्हें यह वहम न हो जाए कि मैंने शायद मौत से बचने के लिए घबराहट में नमाज़ लंबी पढ़ी है। अगर मेरे दिल में यह ख़्याल नहीं आता कि तुम्हारे दिल में कभी यह ख़्याल आ जाए कि शायद मैं इसलिए लंबी पढ़ रहा हूँ और तुम नॉर्मल मुझे देखते तो मैं शायद नमाज़ लंबी पढ़ता। बहरहाल फिर उन्होंने अपने ख़ुदा से दुआ मांगी और यह कहा कि अल्लाह! उनको एक-एक कर के हलाक कर दे अर्थात् दुश्मनों को। दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ की। हज़रत ख़ुबेब ने ये शेअर भी पढ़े कि :

وَلَسْتُ اُبَالِی حِیْنَ اُقْتَلُ مُسْلِمًا
عَلَی اَیِّ شِقٍّ کَانَ لِلّٰہِ مَصْرَعِیْ
وَ ذٰلِکَ فِی ذَاتِ الْاِلٰہِ وَاِنْ یَّشَاْ
یُبَارِکْ عَلٰی اَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعِ

जब मैं मुस्लमान होने की हालत में मारा जा रहा हूँ तो मुझे परवाह नहीं कि किस करवट अल्लाह की ख़ातिर गिरूँगा और मेरा यह गिरना अल्लाह की ज़ात के लिए है और अगर वह चाहे तो टुकड़े किए हुए जिस्म के जोड़ों को बरकत दे सकता है।

(सही बुख़ारी किताबुल् जिहाद वल् सैर बाब ... हदीस 3045)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुबेब की क़ैद के हालात का वाक़िया इस तरह वर्णन किया है कि "अभी यह दोनों सहाबी क़ुरैश के पास ग़ुलामी की हालत में क़ैद थे कि एक दिन ख़ुबेब ने हारिस की लड़की से अपनी ज़रूरत के लिए एक उस्तुरा मांगा और उस ने दे दिया। जब यह उस्तुरा ख़ुबेब के हाथ में था तो बिंत-ए-हारिस का एक ख़ुर्द साला बच्चा खेलता हुआ ख़ुबेब के पास आ गया और ख़ुबेब ने उसे अपनी रान पर बिठा लिया। माँ ने जब देखा कि ख़ुबेब के हाथ में उस्तुरा है और रान पर उस का बच्चा बैठा है तो वह काँप उठी और उस के चेहरे का रंग फ़क़ हो गया। ख़ुबेब ने उसे देखा तो उसके ख़ौफ़ को समझते हुए कहा "क्या तुम यह ख़्याल करती हो कि मैं इस बच्चे को क़तल कर दूँगा? यह ख़्याल न करो। मैं इन शा अल्लाह ऐसा नहीं करूँगा।" माँ का कमलाया हुआ चेहरा ख़ुबेब के इन शब्दों से फूल बन गया। यह औरत ख़ुबेब के आला अख़लाक़ से इस क़दर प्रभावित थी कि वह बाद में हमेशा कहा करती कि "मैंने ख़ुबेब की तरह का अच्छा क़ैदी कोई नहीं देखा।' वह यह भी कहा करती थी कि ' मैंने एक दफ़ा ख़ुबेब के हाथ में एक अंगूर का ख़ोशा देखा था जिससे वे अंगूर के दाने तोड़-तोड़ कर खाता था। हालाँकि इन दिनों में मक्का में अंगूरों का नामो-निशान नहीं था और ख़ुबेब उन्ही ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था। वह कहती हैं कि मैं समझती हूँ कि यह ख़ुदाई रिज़्क़ था जो ख़ुबीब के पास आता था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 514-515)

और रिवायत में हज़रत ख़ुबेब बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ैद के वाक़िया में यह भी लिखा है कि مَاوِیَّہ، حُجیر بن ابو اِھَاب की आज़ाद करदा लौंडी थी। मक्का में उन्ही के घर में हज़रत ख़ुबेब बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हो केद थे ताकि हुर्मत वाले महीने ख़त्म हों तो उन्हें क़तल किया जा सके। माविया ने बाद में इस्लाम क़बूल कर लिया था और वे अच्छी मुस्लमान साबित हुईं। माविया बाद में यह क़िस्सा वर्णन करती थीं कि अल्लाह तआला की क़सम मैंने हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो से बेहतर किसी को नहीं देखा। मैं उन्हें दरवाज़े की दर्ज़ से देखा करती थी और वे ज़ंजीर में बंधे होते थे और मेरे ज्ञान में सम्पूर्ण पृथ्वी पर खाने के लिए अंगूरों का एक दाना भी नहीं था अर्थात् कि इस इलाक़े में कोई दाना नहीं था। इस इलाक़े में कोई अंगूर नहीं था लेकिन हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ में आदमी के सिर के बराबर अंगूरों का गुच्छा होता था अर्थात् काफ़ी बड़ा गुच्छा होता था। यह एक-आध दफ़ा का वाक़िया नहीं। इस के मुताबिक़ तो कई दफ़ा उसने यह देखा है जिसमें से वे खाते थे। वे अल्लाह के रिज़्क़ के सिवा और कुछ नहीं था। हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ते और औरतें वे सुनकर रो देतीं और उन्हें हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो पर रहम

आता। वह बताती हैं कि एक दिन मैंने हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि ख़ुबेब! क्या तुम्हारी कोई ज़रूरत है? तो उन्होंने जवाब दिया नहीं। हाँ एक बात है कि मुझे ठंडा पानी पिला दो और मुझे बुतों के नाम पर ज़बह किए जाने वाले से गोश्त कभी नहीं देना। जो खाना तुम लोग देते हो कभी वह खाना नहीं देना जो बुतों के नाम पर ज़बह किया गया हो और तीसरी बात यह कि जब लोग मेरे क़तल का इरादा करें तो मुझे बता देना। फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र गए और लोगों ने हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो के क़तल पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया तो कहती हैं कि मैंने उनके पास जा कर उन्हें यह ख़बर दी। कहती हैं कि अल्लाह की क़सम उन्होंने अपने क़तल किए जाने की कोई पर्वा नहीं की। उन्होंने मुझसे कहा मेरे पास उस्तुरा भेज दो ताकि मैं अपने आपको दुरुस्त कर लूं। वह बताती हैं कि मैंने अपने बेटे अबू हुसैन के हाथ उस्तरा भेजा। रावी कहते हैं कि वे उनका हक़ीक़ी बेटा नहीं था बल्कि माविया ने इस की सिर्फ परवरिश की थी। बहरहाल जब बच्चा चला गया तो कहती है कि मेरे दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि अल्लाह की क़सम ख़ुबेब ने अपना इंतेक़ाम पा लिया। अब मेरा बेटा उस के पास है। उस्तरा उसके हाथ में है और वह तो इंतेक़ाम ले-ले गा। ये मैंने क्या कर दिया मैंने इस बच्चे के हाथ उस्तरा भेज दिया। ख़ुबेब इस बच्चे को उस्तरे से क़तल कर देगा और फिर कहेगा कि मर्द के बदले मर्द। मैंने तो बदला ले लिया। फिर जब मेरा बेटा उनके पास उस्तुरा लेकर पहुंचा तो उन्होंने वह लेते हुए मज़ाक में इस बच्चे को कहा कि तू बड़ा बहादुर है। क्या तुम्हारी माँ को मेरी ग़द्दारी का ख़ौफ़ नहीं आया? और तुम्हारे हाथ में मेरे पास उस्तरा भिजवा दिया जबकि तुम लोग मेरे क़तल का इरादा भी कर चुके हो। हज़रत माविया यह वर्णन करती हैं कि ख़ुबेब की ये बातें में सुन रही थी। मैंने कहा हे ख़ुबेब मैं अल्लाह की अमान की वजह से तुमसे बे-ख़ौफ़ रही और मैंने तुम्हारे माबूद पर भरोसा कर के इस बच्चे के हाथ तुम्हारे पास उस्तुरा भिजवा दिया। मैंने वह इसलिए नहीं भिजवाया कि तुम इस से मेरे बेटे को क़तल कर डालो। हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं ऐसा नहीं हूँ कि इस को क़तल करूँ। हम अपने दीन में ग़द्दारी जायज़ नहीं समझते। वह बताती हैं कि फिर मैंने ख़ुबेब को ख़बर दी कि लोग कल सुबह तुम्हें यहां से निकाल कर क़तल करने वाले हैं। फिर यह हुआ कि अगले दिन लोग उन्हें ज़ंजीरों में जकड़े हुए तन्ईम ले गए और जैसा कि बताया है कि यह मक्का के क़रीब तीन मेल के फ़ासिला पर जगह थी। ख़ुबेब के क़तल का तमाशा देखने के लिए बच्चे औरतें ग़ुलाम और मक्का के बहुत सारे लोग वहां पहुंचे। कोई भी मक्का में न रहा। हर एक जो इंतेक़ाम चाहता था वह उनको देखने के लिए चला गया। जो इंतेक़ाम चाहते थे वे तो अपनी आँखें ठंडी करने के लिए और जिन्हों ने इंतेक़ाम नहीं लेना था और जो इस्लाम और मुस्लमानों के मुख़ालिफ़ थे वे मुख़ालिफ़त का इज़हार करने और ख़ुश होने के लिए वहां गए थे कि देखें किस तरह उस का क़तल किया जाता है? फिर जब हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़ैद बिन दसिना रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ लेकर तन्ईम पहुंच गए तो मुशरेकीन के हुक्म से एक लंबी लक्कड़ी खोदी गई। फिर जब वे लोग ख़ुबीब को इस लक्कड़ी के पास लेकर पहुंचे जो वहां खड़ी की गई थी। तो ख़ुबीब बोले क्या मुझे दो रकात नमाज़ पढ़ने की मोहलत मिल सकती है। लोग बोले कि हाँ। हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो ने दो नफ़ल इख़तिसार के साथ अदा किए और उन्हें लंबा नहीं किया।

(अल् तबकातुल् कुब्रा भाग 8 पृष्ठ 399 दार अहया अल् रास् अरबी बेरूत)

(सही बुख़ारी किताबुल् जिहाद वल् सैर बाब हल यस्तासर अल् रजुल व मन लम यसतासिर हदीस : 3045)

(ओसोदुल गाबा भाग 1 पृष्ठ 683 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

जैसा कि मैंने बताया इसलिए लंबा नहीं किया कि कहीं उनको यह ख़्याल न हो कि मैं शायद मौत से बचने के लिए लंबी नमाज़ पढ़ रहा हूँ। इब्न-ए-साद के हवाले से जो रिवायत अभी वर्णन हुई है इस के मुताबिक़ माविया जो थीं हुज़ेर बिन अबू इहाब की आज़ाद करदा लौंडी थीं जिनके घर में हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो केद किए गए थे। अल्लामा इब्ने अब्दुल बर्रा के मुताबिक़ हज़रत ख़ुबेब रज़ियल्लाहु अन्हो उक़बह के घर में क़ैद थे और उक़बा की बीवी उन्हें ख़ुराक मुहय्या करती थी और खाने के वक़्त खोल दिया करती थीं।

(अल् इस्तेआब भाग 2 पृष्ठ 442 दारुल जलील बेरूत 1992 ई.)

बहरहाल यह उन लोगों की क़ुर्बानियां थीं और मौत से बे-ख़ौफ़ी थी। इस्लाम की ख़ातिर जान देने के लिए यह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो हर वक़त तैयार रहने वाले थे। इसी सरिया का वर्णन अभी मज़ीद भी है जो इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन कर दूँगा।

(रोज़नामा अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 7 जून 2024 पृष्ठ 2 से 6)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

मुस्लमानों की यकजहती भी क़ायम रहेगी। उनकी आँखों के सामने न सिर्फ यह नज़ारा होता है कि दुनिया के किन किन कोनों में ख़ुदा तआला ने इस्लाम को फैला दिया बल्कि वह यह भी देखते हैं कि एक बे-आब-ओ-गयाह जंगल से बुलंद होने वाली वह आवाज़ जिसको ग़ैर तो अलग रहे अपने भी नहीं सुनते थे और आवाज़ देने वाले को हर किस्म के मज़ालिम का तख़्ता-ए-मश्क़ बनाते थे, आज दुनिया के कोनों, कोनों तक पहुंच कर लाखों इन्सानों के इजतेमा का बायस बन रही है। वह अल्लाह तआला के इस अज़ीमुश्शान निशान को देखते और अपने ईमानों में एक ताज़गी और लताफ़त महसूस करते हैं कि कहाँ मुहम्मद अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पैदा हुए जिन्हों ने एक ऐसी आवाज़ बुलंद की जो गूँजी और गूँजती चली गई यहां तक कि वे दूर दराज़ मुल्कों में पहुंची और लाखों लोगों को यहां खींच लाई और वह मक्का जहां रहने वालों की अज़िय्यतों और तकलीफों की वजह से मुस्लमानों को अपना वतन छोड़ना पड़ा और जिन्हें इस सरज़मीन में لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहने की इजाज़त तक नहीं थी आज उसी मक्का मुकर्रमा में हर एक की ज़बान पर اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۔ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ जारी है और वे لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ कहते जा रहे हैं। गोया इस वक़्त ख़ुदा तआला उनके सामने खड़ा होता है और वे उस से ये कह रहे होते हैं कि ई हमारे रब हम हाज़िर हैं हम इक़रार करते हैं कि तेरा कोई शरीक नहीं केवल तू ही इस अमर का मुस्तहिक़ है कि बंदों को आवाज़ दे और हे ख़ुदा तेरे बुलाने पर हम तेरे हुज़ूर हाज़िर हैं। अतः मक्का मुकर्रमा वह मुक़ाम है जहां हर साल लाखों मुस्लमान केवल इसलिए जमा होते हैं कि वे ख़ुदा तआला की इबादत करें और दुनिया के सामने इस बात की शहादत पेश करें कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का लाया हुआ दीन आज भी ज़िंदा है और आप के ख़ादिम आज भी आपकी आवाज़ को बुलंद करने के लिए दुनियामें मौजूद हैं। गोया हज दुनिया को यह पैग़ाम पहुँचाता है कि इस्लाम की रगों में अब भी ज़िंदगी का ख़ून दौड़ रहा है। अब भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ रखने वाले लोग इस्लाम के मर्कज़ मक्का मुकर्रमा में जमा हैं और उन्होंने अपने इस ताल्लुक़ का ऐलान किया है जो उन्हें इस्लाम और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से है। उन्होंने इस बात की शहादत दी है कि चाहे कमज़ोर ही सही लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम-लेवा अब भी दुनिया में मौजूद हैं और अब भी मुस्लमानों की क़ौमी ज़िंदगी की रग फड़क रही है ।यही वजह है कि इस्लाम ने जिस तरह नमाज़ और रोज़ा और ज़कात को ज़रूरी क़रार दिया है इसी तरह इस ने हज को भी एक ज़रूरी फ़रीज़ा क़रार दिया है।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 30)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान 27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

मैंबरान मज्लिस-ए-आमला मिसाली रंग में अपना उदाहरण प्रस्तुत करें

पांचों समय नमाज़ बाक़ायदगी से अदा करें

*इस्लाम को फैलाने के नए और प्रभावी तरीक़ों को क्रियान्वित करना चाहिए

*ख़िदमत की ग़रज़ से आपको वृद्ध लोगों के घरों में जाना चाहिए, ये लोग अकेले हैं ,यदि उनको मिलने जाएं तो वे ख़ुश होते हैं क्योंकि उनके अपने परिजन उनको मिलने नहीं जाते

*आपको किसी अफ्रीकन मुल्क में हैंडपंप लगाने के लिए कम-से-कम प्रत्येक वर्ष कुछ रक़म इकट्ठी करनी चाहिए

*अत्फ़ाल की 15 साल तक अच्छी तर्बीयत करें फिर ये हमेशा तंज़ीम से अटैच रहेंगे

*जो ख़ुद्दाम जुमा में नहीं आते उन्हें गाहे-बा-गाहे तवज्जा दिलाते रहें

यदि मस्जिद दूर है तो चार या पाँच ख़ुद्दाम आपस में मिल कर बाजमाअत नमाज़-ए-जुमा अदा कर सकते हैं

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया फिनलैंड की ऑनलाइन मुलाक़ात और हुज़ूर अनवर के कीमती उपदेश

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 13 नवंबर 2021 ई. को नैशनल आमला मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया फिनलैंड से ऑनलाइन मुलाक़ात फ़रमाई। हुज़ूर अनवर ने इस मुलाक़ात के लिए इस्लामाबाद (टिल्लफ़ोरड) में क़ायम एम.टी.ए. स्टूडीयोज़ में रौनक अफ़रोज़ हुए जबकि मैंबरान मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ने इस ऑनलाइन मुलाक़ात के लिए अहमदिया हाऊस Helsinki फ़िन लैंड से शिरकत की। दुआ के साथ इस मुलाक़ात का आरंभ करने के बाद हुज़ूर अनवर ने प्रत्येक मैंबर मज्लिस-ए-आमला से बात चीत फ़रमाई और उन्हें उनके विभाग के हवाला से उनकी ज़िम्मेदारियों और फ़रायज़ की तरफ़ तवज्जा दिलाई जिसके साथ-साथ प्रत्येक मैंबर मज्लिस-ए-आमला को इन्फ़रादी तौर पर अपने विभाग की मसाई के हवाला से अपनी रिपोर्ट पेश करने का अवसर मिला और हुज़ूर अनवर से राहनुमाई तलब करने की सआदत हासिल हुई।

दौरान-ए-मुलाक़ात हुज़ूर अनवर ने नसीहत फ़रमाई कि मैंबरान मज्लिस-ए--आमला मिसाली रंग में अपना उदाहरण पेश करें। हुज़ूर अनवर ने मैंबरान आमिला पर विशेष ज़ोर दिया कि वे पांचों समय नमाज़ बाक़ायदगी से अदा करें। फिर इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने के लिए नए तरीक़े ढूढ़ने के विषय में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस ख़्याल पर डटे न हों कि आपने वही पुराने इस्लाम को फैलाने के तरीक़े ही प्रयोग करने हैं और बस यही वे रास्ते हैं बल्कि आपको देखना चाहिए कि वे कौन से प्रभावी तरीक़ और रास्ते हैं जिनके माध्यम ये लोग इस्लाम के पैग़ाम को क़बूल कर सकते हैं और फिर आपको इन नए और मोस्सर तरीक़ों को ब-रू-ए-कार लाना चाहिए।

एक ग़ानीन ख़ादिम जो मुहतमिम ख़िदमत-ए-ख़लक़ हैं उन्हें अपने विभाग की दरुस्त इस्तिलाह का इलम नहीं था जिस पर हुज़ूर अनवर ने अज़राह शफ़क़त असंख्य बार उन के लिए मुहतमिम ख़िदमत-ए-ख़लक़ की इस्तिलाह दुहराई ताकि उन्हें ज़हन नशीन हो जाए और फ़रमाया कि अब आपको इस इस्तिलाह का इलम होना चाहिए और आप को यह इस्तिलाह बोलनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने इस ख़ादिम से इस्तफ़सार फ़रमाया कि आपका ख़िदमत-ए--ख़लक़ का क्या मन्सूबा है

इस ख़ादिम ने अर्ज़ की कि हमारे यहां कई मंसूबे हैं। यहां ख़िदमत-ए-ख़लक़ को बड़ी एहमियत हासिल है। हमारा काम तो मामूली ही है जबकि उसका अच्छा असर है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपको वृद्ध लोगों के घरों में जाना चाहिए। इन मुल्कों में ये लोग अकेले हैं और यदि आप उनको मिलने जाएं तो वे ख़ुश होते हैं क्योंकि उनके अपने परिजन उनको मिलने नहीं जाते। इसी तरह आपको किसी अफ्रीकन मुल्क में हैंडपंप लगाने के लिए कम से कम प्रत्येक वर्ष कुछ रक़म इकट्ठी करनी चाहिए। यदि आप इस से ज़्यादा ख़र्च नहीं कर सकते तो वर्ष में कम से कम एक हैंडपंप फिनलैंड जमाअत की तरफ़ से लगना चाहिए। आप उसके लिए बनाएँ।

मुहतमिम साहिब इतफ़ाल को हिदायात से नवाज़ते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अच्छा यह ख़्याल रखें कि पंद्रह वर्ष तक इतनी ट्रेनिंग हो जाए अत्फ़ाल की कि जब वे ख़ुद्दाम में जाएं तब भी अटैच रहें जमाअत से और मज्लिस से। अतफ़ालुल अहमदिया की हद तक तो बड़े अच्छे होते हैं। जब पंद्रह वर्ष की उम्र को पहुंचते हैं तो वे आज़ादी मिलती है तो फिर बिल्कुल ही बिगड़ जाते हैं। असल चीज़ यह है कि पंद्रह वर्ष के बाद सँभालना और यदि पंद्रह वर्ष तक अच्छी तरह सँभाला जाए तो फिर हमेशा अटैच रहते हैं। इस तरफ़ विशेष तवज्जा करें।

एक ख़ादिम ने प्रश्न किया कि जिन ख़ुद्दाम से बार-बार संपर्क क़ायम करने के बावजूद भी संपर्क क़ायम नहीं हो रहा इस हवाले से हम क्या कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि छोटा सा मुलक है। संपर्क क़ायम करें कोई आस्ट्रेलिया तो नहीं है जो एक कोने से दूसरे कॉर्नर तक संपर्क नहीं क़ायम हो रहा। तो कोशिश करें राबते क़ायम होने चाहिए इसका अर्थ है आप में सुस्ती है। जिससे संपर्क क़ायम नहीं हो रहा आमिला की सुस्ती है। ओहदेदारों की सुस्ती है जो संपर्क क़ायम नहीं करते। समझ आई। कोई निज़ाम ऐसा बनाएँ कि प्रत्येक तक पहुंचे। मैंने मुरब्बी साहिब को कहा था कि उठ के अस्सलामो अलैकुम वा-

अलैकुम अस्सलाम कह के हाल पूछ लिया करें यदि और कुछ भी न कहें नाँ तो इसी से संपर्क हो जाते हैं। आप संपर्क करते हैं उस समय जब आपने चंदा लेना होता है, जब आपने रिपोर्ट मांगनी होती है जब आपने वक़ार-ए-अमल कराना होता है जब आपने कुछ और अपना उद्देश्य पूरा करना होता है तो उस समय संपर्क कर लेते हैं। कभी ख़्याल नहीं आया कि चलो वैसे ही अपने भाई की तबीयत पूछ लूँ क्या हाल है इस का। ईद वाले दिन उसको अस्सलामो अलैकुम वाअलैकुम अस्सलाम कर के ईद का तोहफ़ा भेज दें। ख़ुद्दामुल् अहमदिया चाहे भेज दिया करे आप लोग ग़रीब हैं तो अपने बजट में से नहीं भेज सकते? तो इसी से उनको एहसास होगा कि हाँ जमाअत से हमारा संपर्क है जमाअत हमारा ख़्याल रखती है तो इस तरह राबते बढ़ाएं कि जब कोई काम नहीं तब भी आप उनसे अस्सलामो अलैकुम वाअलैकुम अस्सलाम होता हो। फिर उनमें भी एहसास पैदा होगा। कोई इंतेहाई बेशरम होगा तो उस को शर्म नहीं आएगी बाक़ी को शर्म आही जाएगी

एक ख़ादिम ने प्रश्न किया कि नमाज़-ए-जुमा की अदायगी के हवाला से ख़ुद्दाम को किस तरह प्रभावी रंग में तवज्जा दिलाई जा सकती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मुहतमिम तर्बीयत को चाहिए कि गाहे-बा-गाहे ख़ुदा म को जुमा की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाता रहे। उन्हें यह बताना चाहिए कि एक जुमा अदा न कर सकने की वजह से आपके दिल पर एक दाग़ लग जाता है और अगला जुमा अदा न करने से एक और दाग़ लग जाता है और तीसरा जुमा अदा न करने से सारा दिल स्याह हो जाता है। और यह कि ऐसे लोगों के सिवा जिन्हें बहुत शदीद और नागुज़ीर उज़्र हो, प्रत्येक व्यक्ति को जुमा अदा करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने मज़ीद फ़रमाया कि उनको बताएं कि इस अह्द का क्या अर्थ है जो हमने किया है कि हम दीन को समस्त संसारिक कार्यों पर प्रथमिकता देंगे। यदि मस्जिद दूर है तो चार या पाँच ख़ुद्दाम बाहम मिलकर बाजमाअत नमाज़-ए-जुमा अदा कर सकते हैं। बहर हाल आपको बार--बार नमाज़-ए-जुमा की अदायगी पर-ज़ोर देना चाहिए और तवज्जा दिलानी चाहिए। यह विभाग तर्बीयत की ज़िम्मेदारी है।

एक दूसरे ख़ादिम ने प्रश्न किया कि तब्लीग़ी पमफ़ेलट जो हम तक़सीम करते हैं उनमें आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इस्म-ए-मुबारक भी होता है और इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खलिफ़ा की तसावीर भी होती हैं तो जब हम पमफ़लेट तक़सीम करते हैं तो कुछ लोग इन पमफ़्लेटस को या तो फाड़ के फेंक देते हैं या डस्टबि में फेंक देते हैं तो हुज़ूर इस सिल्सिला में हम क्या कर सकते हैं? हुज़ूर से राहनुमाई की दरख़ास्त है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जहां बहुत ज़रूरी है वहां तस्वीर शाय करें जहां तस्वीर शाय करने की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है वहां ज़रूरत कोई नहीं तस्वीर की। ठीक है और जो जिसको तक़सीम करते हैं उस से पूछ लें कि ये हम दे रहे हैं तुम लोगे, लेना चाहते हो। जो लेना चाहते हैं उनको दें बाक़ी ठीक है तस्वीरें ज़ाए तो करते ही हैं लोग या डस्टबिन में फेंक देते हैं या वैसे फाड़ के सड़क पर फेंक देते हैं ऊपर लोग चल रहे होते हैं तो प्रत्येक को ज़बरदस्ती देने की ज़रूरत कोई नहीं कि ये हमारे पमफ़लट हैं लेना चाहोगे जो लेना चाहे उस को दें तो बहरहाल उनको तो कोई क़दर नहीं है नाँ उन्होंने तो इस तरह करना ही है जब तक उनको समझ न आए तो जहां इंतेहाई ज़रूरत है वहां तस्वीर शाय करनी चाहिए। बाक़ी ज़रूरत कोई नहीं है शाय करने की। बाक़ी तो तब्लीग़ करने के लिए ये चीज़ें तो फिर करनी पड़ती हैं कुछ न कुछ तो मुश्किलात हैं और कई दफ़ा भावनाओं को तकलीफ़ भी पहुँचती है इस का सामना करना पड़ता है।

एक ख़ादिम ने प्रश्न किया कि कुछ लोग ख़ुद से काम न करने का उज़्र ये पेश करते हैं कि हुकूमती benefits से भी उतनी ही आमदनी हो जाती है जितनी ख़ुद-काम कर के। ऐसे अहबाब को किस तरह ख़ुद-काम करने की तरफ़ तवज्जा दिलाई जाए

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अच्छा उनसे कहें तुम लोग सदक़ा लेना पसंद करते हो या सदक़ा देना पसंद करते हो। इस्लाम तो कहता है आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि देने वाला हाथ लेने वाले हाथ से बेहतर है। तो बजाय उसके कि तुम मुस्लमान कहलाते हुए और अहमदी मुस्लमान कहलाते हुए इस्लाम की शिक्षा पर अमल करो और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस इरशाद पर अमल करो कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है, तुम लोगों ने नीचे हाथ रख के माँगना शुरू कर दिया है सदक़ा ले रहे हो हालाँकि एक नौजवान आदमी जो सेहत मंद भी है और काम कर सकता है इस को अर्थ ही कोई नहीं सदक़ा लेना। इस से कहो क़ाबिल शर्म बात है कि तुम फ़क़ीर बन के रह रहे हो । पाकिस्तान में यदि होते तो फ़क़ीर बन के माँगना बर्दाश्त करते? यहां आते हो तो फ़क़ीर बन जाते हो। थोड़ी सी ग़ैरत दिलाएँ तो आप ही ठीक हो जाऐंगे।

इसके बाद मुहतरम सदर साहिब मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया फिनलैंड ने हुज़ूर अनवर से इस ख़ाहिश का इज़हार किया कि यदि नौ मुंतख़ब मैंबरान मज्लिस-ए-आमला हुज़ूर अनवर के पीछे अह्द दोहरा सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि जो मैंने बातें कह दी हैं उसपे अमल करें और जो plan है इस के अनुसार काम करें और एक नए जज़्बे और जोश से अपना नया काम शुरू करें और कोशिश ये करें कि हमने सौ फ़ीसद अपने टार्गेट जो हैं अपने plan जो हैं उनको achieve करना है। यही असल चीज़ है अह्द दोहराने से कुछ नहीं होगा कि अह्द दोहरा के इस के बाद कह दिया कि हमने अह्द दुहराया था और ख़त्म हो गई बात। हमने दुआ कर ली नई आमिला ने दुआ कर ली इस दुआ में सारा कुछ शामिल हो गया।

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 30 नवंबर 2021)

★ ★ ★

दहेज का प्रदर्शन एक ग़लत रस्म है

हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्य-दहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"शादी ब्याह के अवसर पर कुछ फ़ुज़ूल किस्म की रस्में हैं, जैसे बरी को दिखाना या वह सामान जो दूलहा वाले दूल्हन के लिए भेजते हैं इस का इज़हार, फिर जहेज़ का इज़हार, बाक़ायदा नुमाइश लगाई जाती है। इस्लाम तो केवल हक़ महर के इज़हार के साथ निकाह का ऐलान करता है, बाक़ी सब फ़ुज़ूल रस्में हैं। एक तो बरी या दहेज की नुमाइश से उन लोगों का उद्देश्य जो साहब-ए-तौफ़ीक़ हैं केवल बढ़ाई का इज़हार करना होता है कि देख लिया हमारे शरीकों ने भाई बहन या बेटा बेटी को शादी पर जो कुछ दिया था हमने देखो किस तरह इस से बढ़कर दिया है। केवल मुक़ाबला और नुमाइश है .. केवल रस्मों की वजह से,अपनी नाक ऊंचा रखने की वजह से ग़रीबों को मुश्कि-लात में, कर्ज़ों में ना गिरफ़्तार करें और दावा यह है कि हम अहमदी हैं और बैअत की दस शरायत पर पूरी तरह अमल करेंगे .. जबकि बैअत करने के बाद तो वे यह अहद कर रहा है कि संसारिक लोभ और लालच से बाज़ आजाएगा और अल्लाह और उसके रसूले सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हुकूमत मुकम्मल तौर पर अपने ऊपर तारी कर लेगा। अल्लाह और रसूले करीम हम से क्या चाहते हैं,यही कि रस्म और रिवाज और संसारिक लोभ और लालच छोड़कर मेरे अहकामात पर अमल करो।"

(शरायत-ए-बैअत और अहमदी की ज़िम्मेदारियाँ, पृष्ठ 101 से 103)

(विभाग रिश्ता नाता, नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया कादियान)

★ ★ ★

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम ज़िल् हज्जा का चांद देख लो तो जो व्यक्ति क़ुर्बानी करना चाहता हो उसे क़ुर्बानी करने तक अपने बाल और नाख़ून नहीं कटवाने चाहिए

किसी भी सिलसिला का पहला और आख़िरी नबी या वह नबी जिसके विषय में अल्लाह तआला का वादा हो कि वह उसे इन्सानों की दस्तरस से बचाएगा, क़तल नहीं हो सकते

इनके इलावा बाक़ी अम्बिया के लिए क़तल-ए-नफ़्स कोई मायूब बात नहीं और इस से नबी की शान में कोई ख़लल स्थित नहीं होता

ग़ुस्सा की हालत में दी जाने वाली तलाक़ भी लागू होगी, शरती तलाक़ भी निर्धारित शर्त के पूरा होने पर लागू हो जाती है,

---

तलाक़ के लिए पसंदीदा बात यही है कि पति महावारी के दिनों के अन्यथा दूसरे में तलाक़ दे लेकिन यदि वह गर्भावस्था महवारी या निफ़ास के दिनों में तलाक़ देता है तो ऐसी तलाक़ भी लागू होगी

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त : 26)

प्रश्न : एक मित्र ने उसूल-ए-फ़िक़ा के क़ानून कथन "सहाबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शरई आदेश के इस्तिंबात के लिए दलील है के बारे में हुज़ूर अनवर से राहनुमाई की दरख़ास्त की जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 20 जुलाई 2020 में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया :

उतर : इस बात में कोई शक नहीं कि सहाबा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तर्बीयत याफताह थे, उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज्ञान हासिल किया और वे शरीयत के उद्देश्य को ज़्यादा अच्छी तरह जानते थे। लेकिन इसके बावजूद उसूल-ए-फ़िक़ा वालों का यह क़ानून एक hard and fast rule के तौर पर नहीं माना जा सकता क्योंकि अक़्वाल सहाबा भी अहादीस ही की तरह आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा का दौर गुज़र ने के बाद जमा किए गए।

सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अक़्वाल का दर्जा तो निसंदेह अहादीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद आता है। जबकि बहुत सी अहादीस पर उल्मा-ओ-फ़ुक़हा ने बहस कर के उन्हें कमज़ोर और मौज़ू क़रार दिया है। इमाम अल् मोहद्देसीन हज़रत इमाम बुख़ारी को छः लाख के क़रीब अहादीस याद थीं जिनमें से उन्होंने सोला वर्ष की मेहनत शाक के बाद केवल तीन हज़ार के क़रीब अहादीस को अपनी सही में शामिल फ़रमाया। दूसरी सदी हिज्री के मुर्ख़ वाक़दी की वर्णन करदा असंख्य अहादीस ऐसी हैं जिनको उल्मा ने काबिल-ए-इस्तिनाद क़रार नहीं दिया।

अतः असल बात वही जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ और इस्लाम की निशा-ए-सानिया के लिए अवतरित होने वाले आदेश-ओ-अदल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाई है कि "कौन ऐसा मोमिन है जो क़ुरआन शरीफ़ को हदीसों के लिए आदेश निर्धारित न करे? और जब कि वह ख़ुद फ़रमाता है कि यह कलाम आदेश है और कथन फ़सल है और हक़ और झूठे की शनाख़्त के लिए फ़ुर्क़ान है और तराज़ू है तो क्या यह ईमानदारी होगी कि हम ख़ुदा तआला के ऐसे कथन पर ईमान न लावें? और यदि हम ईमान लाते हैं तो हमारा अवश्य यह मज़हब होना चाहिए कि हम प्रत्येक हदीस और प्रत्येक कथन को क़ुरआन-ए-करीम पर अर्ज़ करें ता हमें मालूम हो कि वह वाक़ई तो पर इसी मिशकात-ए-वह्यी से नूर हासिल करने वाले हैं जिससे क़ुरआन निकला है या उस के मुख़ालिफ़ हैं।"

(अल्-हक़ मुबाहिसा लुधियाना, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 4 पृष्ठ 22)

अतः इस शिक्षा की रोशनी में हमारा मज़हब यह है कि सहाबा के वे अक़्वाल जो क़ुरआन-ए-करीम,सुन्नते नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अहादीस सहीहा के अनुसार हैं, शरई आदेश के इस्तिंबात के लिए दलील शुमार होंगे।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि क्या ग़ैर मुस्लिमों पर रहम करना और उनके लिए अस्तग़फ़ार करना जायज़ है। और उन पर अत्माम-ए-हुज्जत होने या न होने से उन के लिए रहम और इस्तग़फ़ार करने में कोई अंतर पड़ेगा? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 20 जुलाई 2020 ई. में इस का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : क़ुरआन-ए-करीम का इलम रखने वाले की तरफ़ से इस किस्म का प्रश्न करना क़ाबिल-ए-ताज्जुब है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में जिस तरह अपने लिए रब्बुल आलमीन के शब्द प्रयोग करके यह मज़मून वर्णन फ़र्मा दिया कि अल्लाह तआला समस्त जहानों में पाई जाने वाली मख़लूक़ की रंग-ओ-नसल और मज़हब-ओ-मिल्लत का अंतर किए बग़ैर रबूबियत करने वाली ज़ात है। इसी तरह अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा-ओ-मौला हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात बाबरकात के लिए रहमतुल लिल् मौमेनीन या रहमतुल लिल् मुसलेमीन के बजाय रहमतुल लिल् आलेमीन (अल् अंबिया :108) के शब्द प्रयोग फ़र्मा कर हमें बता दिया कि यह रसूलु समस्त जहानों के लिए बिना भेद भाव रंग-ओ-नसल और मज़हब-ओ-मिल्लत सरापा रहमत है।

यही शिक्षा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयाइयों को भी दी। इसलिए अपने फ़रमाया لَا يَرْحَمُ اللّٰهُ مَنْ لَا يَرْحَمُ النَّاسَ (सही बुख़ारी किताब अल् तौहीद) यहां भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यरहमुल् मोमिनीन या यरहमुल् अल् मुस्लेमीन की बजाय यरहमुन अल् नास के शब्द प्रयोग कर के हमें समझा दिया कि एक हक़ीक़ी मुसलमान का दिल जब समस्त बनीनौ इन्सान के लिए रहमत के जज़बा से लबरेज़ होगा तब वह अल्लाह तआला के रहम का मौरिद हो सकेगा।

जहां तक किसी के लिए इस्तग़फ़ार करने का सम्बन्ध है तो इस बारे में भी क़ुरआन और सुन्नत ने हमारी राहनुमाई फ़रमाई है कि ऐसा मुशरिक जिसके विषय में यह वाज़िह हो जाए कि वह ख़ुदा का दुश्मन और निसंदेह जहन्नुमी है इस के लिए अस्तग़फ़ार न किया जाए। और किसी के जहन्नुमी होने का इलम या तो

अल्लाह तआला की ज़ात को है या उसके उन अम्बिया और बर्गज़ीदों को होता है जिन्हें अल्लाह तआला ख़ुद किसी के जहन्नुमी होने की ख़बर देता है। इसी लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब अल्लाह तआला ने उनके पिता के अल्लाह के दुश्मन होने की ख़बर दी तो आप उस के लिए अस्तिग़फ़ार से दस्त-बरदार हो गए। (सूर : 114)

मदीना के मुनाफ़ेक़ीन की शरारतों और उनकी से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुसलमानों को दी जाने वाली तकालीफ़ की वजह से अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में उनके लिए सख़्त इंज़ार फ़रमाया और उन्हें नाफ़रमान क़रार देते हुए जहन्नुमी क़रार दिया। लेकिन इस के बावजूद अल्लाह ने आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चूँकि उस वक़्त तक उनके लिए अस्तग़फ़ार करने या न करने का इख़्तेयार दिया था इसलिए रईसुल मुनाफ़ेक़ीन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल की वफ़ात पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलने वाले इस इख़्तेयार की बिना पर उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और उसके लिए इस्तिग़फ़ार किया।

इस्लाम की क्षमा की शिक्षा अपने अंदर एक ऐसी गहरी हिक्मत रखती है जिससे पहले धर्मों की तालीमात खाली थीं। इसलिए इस्लाम अपने प्रत्येक दुश्मन के लिए जब तक कि उसके इस्लाह पाने की उम्मीद बाक़ी हो, हिदायत की दुआ करने और उसकी तर्बीयत के लिए कोशिश करने की शिक्षा देता है। इसलिए जंग-ए-अहद में जब मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचा और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी ज़ख़मी हो गए तो किसी ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मुख़ालेफ़ीन-ए-इस्लाम के ख़िलाफ़ बद्दुआ करने की दरख़ास्त तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझे लानत मलामत करने वाला बना कर नहीं भेजा बल्कि उसने मुझे ख़ुदा का संदेश देने वाला और रहमत करने वाला बना कर भेजा है। इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के हुज़ूर यह दुआ की कि हे अल्लाह मेरी क़ौम को हिदायत दे दे क्योंकि वे मेरे स्थान और इस्लाम की वास्तविकता से न-आश्ना हैं। (शोबुल् ईमान लिल्बहीकी) इसी तरह एक और रिवायत में कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के हुज़ूर यह इल्तिजा की कि हे अल्लाह मेरी क़ौम को बख़्श दे क्योंकि वे (इस्लाम और मेरे स्थान की लाइलमी की वजह से इस्लाम की मुख़ालेफ़त कर रही है। (अल् मो अजमुल् कबीर लिल् तिबरानी)

अतः इस्लाम अपने मुतबईन को ताकीद करता है कि वे समस्त बनीनौ इन्सान के लिए बिना भेद भाव मज़हब-ओ-मिल्लत और रंग-ओ-नसल रहम की भावनाएं से परिपूर्ण हों और सिवाए उन मुशरिकों और ख़ुदा के दुश्मनों के जिनके जहन्नुमी होने पर अल्लाह तआला ने मोहर सब्त फ़र्मा दी हो, प्रत्येक के लिए इस्तिग़फ़ार करने वाले हों।

आपके प्रश्न का सम्बन्ध यदि किसी निर्धारित इन्सान के साथ है तो ऐसी सूरः में फिर मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम का प्रश्न नहीं उठता बल्कि इस इन्सान के पैदा-करदा हालात, वाक़ियात और इस से सम्बन्ध रखने वाले हक़ायक़ के अनुसार निर्णय होना चाहिए।

प्रश्न : एक मित्र ने दरयाफ़त किया है कि क्या 1 ज़ुल् हज्जा से क़ुर्बानी तक बाल और नाख़ुन न कटवाने का इरशाद सिर्फ़ हाजियों के लिए है या प्रत्येक क़ुर्बानी करने वाले के लिए है। तथा यह कि यदि किसी इलाक़े में ज़ुलहिज के निकले हुए चांद का बाद में पता चले तो इस इलाक़ा के लोगों के लिए क्या हिदायत है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 11 अगस्त 2020 ई. में इस बारे में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया।

उत्तर : अहादीस से तो यही पता चलता है कि यह आदेश प्रत्येक क़ुर्बानी करने वाले के लिए है। इसलिए हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम ज़िलहिज्जा का चांद देख लो तो जो व्यक्ति क़ुर्बानी करना चाहता है उसे क़ुर्बानी करने तक अपने बाल और नाख़ुन नहीं कटवाने चाहिए।

(सही मुस्लिम ,किताबुल् अज़ हा)

बाक़ी यदि किसी इलाक़े में ज़ुल् हज्जा का चांद निकलने का 29 ज़ुल् काद को न इलम हो सके और एक दो रोज़ बाद वहां के लोगों को इस की सूचना मिले तो इस इलाक़े के लोग उसी वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस आदेश के मुकल्लिफ़ होंगे जब उन्हें चांद के निकलने की सूचना मिले।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु अल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि क्या हज़रत यहया और हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को क़तल किया गया था या क़तल से मुराद उनके संदेश का क़तल है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस बारे में अपने पत्र तिथि 11 अगस्त 2020 ई. में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : हज़रत यहया और हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के क़तल के बारे में जिस तरह इतिहास और जीवनी की कुतुब में और उलमाए सलफ़ के नज़रियात में मतभेद पाया जाता है, इसी तरह जमाअत में भी इस बारे में क़ुरआन की आयात से इस्तिदलाल और अहादीस की तशरीह की रोशनी में ख़ुलफ़ाए अहमदियत की आरा विभिन्न हैं। मेरी राय इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की राय के अनुसार है और मैं क़ुरआन-ए-करीम, अहादीस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में इसी मत पर क़ायम हूँ कि किसी भी सिलसिला का पहला और आख़िरी नबी या वह नबी जिसके विषय में अल्लाह तआला का वादा हो कि वह उसे इन्सानों की दस्तरस से बचाएगा, क़तल नहीं हो सकते। उनके इलावा बाक़ी अम्बिया के लिए क़तल नफ़्स कोई मायूब बात नहीं और इस से नबी की शान में कोई ख़लल स्थित नहीं होता क्योंकि क़तल भी शहादत होती है। परन्तु हाँ नाकाम क़तल हो जाना अम्बिया की शान में से नहीं है। अतः जब एक नबी अपना काम पूरा कर चुके तो फिर वह तिब्बी तौर पर फ़ौत हो या किसी के हाथ से शहीद हो जाए इस में कोई हर्ज की बात नहीं। क्योंकि सफ़लता की मौत पर न किसी को ताज्जुब होता है और न दुश्मन को ख़ुशी होती है।

अतः हज़रत यहया और हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम भी किसी सिलसिला के पहले और आख़िरी नबी नहीं थे और न ही उनके बारे में ख़ुदा तआला का कोई ऐसा वादा वर्णन है कि वह उन्हें दुश्मन के हाथ से अवश्य सुरक्षित रखेगा। इसी तरह हमारा ईमान है कि जब इन अम्बिया की शहादत हुई तो निसंदेह वह अपनी इन ज़िम्मेदारियों को कमाहक़ाहु अदा कर चुके थे जो अल्लाह तआला ने उनके सपुर्द फ़रमाई थीं।

प्रश्न : एक महिला ने निकाह और तलाक़ के बारे में कुछ प्रश्न हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में भिजवा कर उनके बारे में मार्गदर्शन। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 17 अगस्त 2020 ई. में इन प्रश्नों का विस्तार से उत्तर अता फ़रमाते हुए निम्नलिखित इर्शादात फ़रमाए। हुज़ूर ने फ़रमाया :

(1) तलाक़ या ख़ुला के लिए फ़रीक़ैन का सहमत होना या उसके लिए गवाहों का होना आवश्यक नहीं। लेकिन निकाह के आयोजित होने लिए दोनों चीज़ों का होना आवश्यक है। उसकी वजह यह है कि निकाह फ़रीक़ैन के माबैन एक अनुबंध है, जिस के लिए फ़रीक़ैन और लड़की के वली की रजामंदी और गवाहों की मौजूदगी आवश्यक है। तथा इस अनुबंध के ऐलान का भी होना आदेश है।

जबकि निकाह के अनुबंध को ख़त्म करने का इख़्तेयार इस्लाम ने फ़रीक़ैन को दिया है जिसे इस्तिलाह में ख़ुला और तलाक़ कहा जाता है। महिला जिस तरह अपना निकाह ख़ुद-बख़ुद नहीं कर सकती बल्कि अपने वली के माध्यम से करती है, इसी तरह ख़ुला का प्रयोग भी वह बमाध्यम से क़ज़ा या हाकिम-ए-वक़्त ही कर सकती हीता कि ख़ुला की सूरत में उसके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त हो सके। जबकि मर्द जिस तरह अपने निकाह का इनएक़ाद अपनी मर्ज़ी से करता है। इसी तरह तलाक़ का प्रयोग भी वह ख़ुदबख़ुद कर सकता है क्योंकि तलाक़ की सूरत में महिलाओं के हुक़ूक़ की अदायगी ख़ावंद पर लाज़िम होती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुला और तलाक़ का फ़लसफ़ा वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"शरीयत-ए-इस्लाम ने केवल मर्द के हाथ में ही यह इख़्तेयार नहीं रखा कि जब कोई ख़राबी देखे या न मुवाफ़िक़त पावे तो महिलाओं को तलाक़ दे दे बल्कि महिलाओं को भी ये इख़्तेयार दिया है कि वे बमाध्यम से हाकिम-ए-वक़्त के तलाक़ ले-ले और जब महिलाओं ब-माध्यम से हाकिम के तलाक़ लेती है तो इस्लामी इस्तिलाह में इस का नाम ख़ुला है। जब महिलाएं मर्द को ज़ालिम पावे

या वे इस को ना-हक़ मारता हो या और तरह से नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त बदसुलूकी करता हो या किसी और वजह से ना मुवाफ़िक़त हो या वह मर्द वास्तव में नामर्द हो या मज़हब बदले या ऐसा ही कोई और सबब पैदा हो जाए जिसकी वजह से महिलाओं को इस के घर में आबाद रहना नागवार हो तो उन समस्त हालतों में महिलाओं या उसके किसी वली को चाहिए कि हाकिम-ए-वक़्त के पास यह शिकायत करे और हाकिम-ए-वक़्त पर यह लाज़िम होगा कि यदि महिलाओं की शिकायत वाक़ई दरुस्त समझे तो इस महिला को इस मर्द से अपने आदेश से अलैहदा कर दे और निकाह को तोड़ दे लेकिन इस हालत में इस मर्द को भी अदालत में बुलाना आवश्यक होगा कि क्यों न उसकी महिला को इस से अलैहदा किया जाए।

अब देखो कि यह किस क़दर इन्साफ़ की बात है कि जैसा कि इस्लाम ने यह पसंद नहीं किया कि कोई महिला बग़ैर वली के जो इस का बाप या भाई या और कोई अज़ीज़ हो ख़ुद बख़ुद अपना निकाह किसी से करले ऐसा ही यह भी पसंद नहीं किया कि महिलाओं ख़ुद बख़ुद मर्द की तरह अपने शौहर से अलैहदा हो जाए बल्कि जुदा होने की हालत में निकाह से भी ज़्यादा एहतियात की है कि हाकिम-ए-वक़्त का माध्यम से भी फ़र्ज़ करार दिया है ता महिला अपनी कम समझी की वजह से अपने तईं कोई हानी न पहुंचा सके।

(चश्म-ए-मार्फ़त, रूहानी ख़ज़ायन भाग 23पृष्ठ 288-289)

ख़ुला का इनएक़ाद चूँकि बमाध्यम क़ज़ा के होता है, इसलिए इस में ख़ुद बख़ुद गवाही क़ायम हो जाती है। लेकिन तलाक़ चूँकि इस तरह नहीं होती इसलिए यदि मियां पत्नी तलाक़ के इजरा पर सहमत हों और उनमें कोई मतभेद न हो तो फिर गवाही के बग़ैर भी तलाक़ प्रभावी होती है। तलाक़ के लिए गवाही का होना मुस्तहब है लाज़िमी नहीं। इस लिए क़ुरआन-ए-करीम ने तलाक़ और रुजू के सिलसिले में जहां गवाही का वर्णन फ़रमाया है वहां उसे नसीहत क़रार दिया है। जैसा फ़रमाया :

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَّأَشْهِدُوا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ذٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ۔

(सूरः अल् तलाक़ : 3) अर्थात् फिर जब महिलाएं इद्दत की आख़िरी हद को पहुंच जाएं तो उन्हें मुनासिब तरीक़ पर रोक लो या उन्हें मुनासिब तरीक़ पर फ़ारिग़ कर दो। और अपने में से दो मुंसिफ़ गवाह निर्धारित करो। और ख़ुदा के लिए सच्ची गवाही दो। तुम में से जो कोई अल्लाह और यौम आखिरत पर ईमान लाता है इस को यह नसीहत की जाती है और जो व्यक्ति अल्लाह का संयम धारण करेगा अल्लाह उसके लिए कोई न कोई रस्ता निकाल देगा।

फ़ुक़हा भी इस बात पर सहमत हैं कि यदि कोई व्यक्ति बग़ैर गवाहों के तलाक़ दे दे या रुजू कर ले तो इससे इस की तलाक़ या रुजू पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

2) जहां तक ग़ुस्से की हालत में दी जाने वाली तलाक़ का मुआमला है तो जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक़ देता है तो वह पत्नी की किसी नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त और फ़ुज़ूल हरकत पर नाराज़ हो कर यह क़दम उठाता है। पत्नी से ख़ुश हो कर तो कोई इन्सान उसे तलाक़ नहीं देता। इसलिए ऐसे ग़ुस्सा की हालत में दी जाने वाली तलाक़ भी लागू होगी।

जबकि यदि कोई इन्सान ऐसे तैश में हो कि इस पर जुनून की कैफ़ीयत तारी हो और उसने नतायज पर ग़ौर किए बग़ैर जल्दबाज़ी में अपनी पत्नी को तलाक़ दी और फिर उस जुनून की कैफ़ीयत के ख़त्म होने पर नादिम हुआ और उसे अपनी ग़लती का एहसास हुआ तो उसी किस्म की कैफ़ीयत के लिए क़ुरआन-ए-करीम ने फ़रमाया है कि :

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ أَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ۔

(अल्बक़रः : 226) अर्थात् अल्लाह तुम्हारी किसमो में (से) लग़ू (किस्मों) पर तुमसे माख़ज़ा नहीं करेगा। हाँ जो (गुनाह) तुम्हारे दिलों ने (बिना ईरादा) कमाया इस पर तुमसे माख़ज़ा करेगा और अल्लाह बहुत बख़शने वाला (और बुर्दबार रहे)।

3) शरती तलाक़ भी निर्धारित शर्त के पूरा होने पर लागू हो जाती है। इस लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के शागिर्द और आपके आज़ाद करदा ग़ुलाम नाफ़ा वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा कि यदि वह बाहर निकली तो उसे तलाक़ है। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़तवा दिया कि यदि उसकी पत्नी बाहर निकलेगी तो उसे तलाक़ हो जाएगी और यदि वह न निकली तो इस पर कुछ नहीं।

(सही बुख़ारी,अल् तलाक़)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं "यदि शर्त हो कि अमुक बात हो तो तलाक़ है और वह बात हो जाएगी तो फिर वाक़ई तलाक़ होजाती है। जैसे कोई व्यक्ति कहे कि यदि अमुक फल खाऊं तो तलाक़ है और फिर वह फल खाले तो तलाक़ हो जाती है।"(अल् बदर, नंबर 21 भाग 2 तिथि 12 जून 1903 ई., पृष्ठ : 162)

(4) तलाक़ के लिए पसंदीदा बात यही है कि ख़ावंद ऐसे मावहवारी के अन्य दिनों में तलाक़ दे जिसमें उसने सम्बन्ध ज़ौजीयत क़ायम न किया हो। लेकिन यदि वह ऐसा नहीं करता और हमल की हालत में, हैज़ या निफ़ास के दिनों में तलाक़ देता है तो ऐसी तलाक़ भी लागू होगी। क्योंकि यदि केवल ऐसे माहवारी के अन्य दिनों में दी जाने वाली तलाक़ ही मोस्सर होती जिसमें ख़ावंद ने सम्बन्ध ज़ौजीयत क़ायम नहीं किया हो तो फिर क़ुरआन-ए-करीम में गर्भवती महिलाओं की इद्दत तलाक़ का वर्णन अबस ठहरता है। अतः क़ुरआन-ए-करीम में गर्भवती महिलाओं की इद्दत तलाक़ का वर्णन इस बात का सबूत है कि गर्भ की हालत में दी जाने वाली तलाक़ भी लागू क़रार पाती है।

इसी तरह हैज़ में दी जाने वाली तलाक़ के बारे में कुतुब अहादीस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह वर्णन मर्वी है कि उनकी तरफ़ से पत्नी को उसके माहवारी के दिन में दी जाने वाली तलाक़, एक तलाक़ शुमार की गई थी।

(सही मुस्लिम, अल् तलाक़)

(5) ऐसी तलाक़ जिसके बाद पत्नी पर इद्दत का आदेश लागू होता है, इस इद्दत के बारे में क़ुरआन का आदेश है कि इस दौरान न ख़ावंद पत्नी को घर से निकाले और न पत्नी अपना घर छोड़ कर जाए, बल्कि इद्दत का अरसा वह ख़ावंद के घर में ही गुज़ारे। इसलिए फ़रमाया :

لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

(अल् तलाक़ : 2) अर्थात् उनको उनके घरों से न निकालो और न वे ख़ुद निकलें।

इस्लाम ने मुतल्लक़ा पर इद्दत के दौरान बनाओ सिंघार करने या काम काज और दीगर ज़िम्मेदारियों की अदायगी के लिए घर से बाहर जाने के हवाले से कोई ऐसी पाबंदी आयद नहीं की जैसी पाबंदियां उसने विधवा पर उसकी इद्दत के दौरान लगाई हैं बल्कि अहादीस में मुतल्लक़ा के लिए उसके बरअक्स आदेश मिलता इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक महिला को तलाक़ की इद्दत के दौरान न केवल बाहर जाने की आज्ञा दी बल्कि इस पर पसंदीदगी का भी इज़हार फ़रमाया। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं :

طُلِّقَتْ خَالَتِي فَأَرَادَتْ أَنْ تَجُدَّ نَخْلَهَا فَزَجَرَهَا رَجُلٌ أَنْ تَخْرُجَ فَأَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ بَلَى فَجُدِّي نَخْلَكِ فَإِنَّكِ عَسَى أَنْ تَصَدَّقِي أَوْ تَفْعَلِي مَعْرُوفًا۔

(सही मुस्लिम, किताब अल्तलाक़)अर्थात् मेरी ख़ाला को तलाक़ हुई और वह अपना खजूर का बाग़ काटने निकल खड़ी हुईं। रास्ते में एक व्यक्ति ने उन्हें घर से बाहर निकलने पर डाँटा। इस पर वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि तुम बेशक अपना खजूर का बाग़ काटो। शायद इस तरह तुम्हें सद्के देने या नेकी करने का अवसर मिल जाए।

6) ख़ुला तलाक़ बायन का आदेश रखता है। अर्थात् उस के बाद रुजू के लिए तजदीद निकाह लाज़िमी है, इस के बग़ैर रुजू नहीं हो सकता।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी ऐस लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 7 जनवरी2021)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 20 June 2024 Issue No. 25

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

परमाणु विकिरण के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए होम्योपैथिक उपचार

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने परमाणु विकिरण से बचने के लिए बचाव के तौर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का नियुक्त होम्योपैथिक नुस्खा निम्नलिखित ढंग से प्रोयोग करने का आदेश फ़रमया तथा फ़रमाया दुआ भी करें की अल्लाह तआला प्रत्येक को अपनी सुरक्षा में रखें। आमीन।

هوالشافی

प्रयोग का ढंग		वृद्ध लोगों के लिए	10 से 15 साल के बच्चों के लिए	10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए	गर्भवती/स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए
पहली खुराक		Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पहली खुराक के 7 दिन बाद	दूसरी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
दूसरी खुराक के 7 दिन बाद	तीसरी खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
तीसरी खुराक के 7 दिन बाद	चौथी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000
चौथी खुराक के 7 दिन बाद	पाँचवीं खुराक	Carcinosin CM	Carcinosin 1000	Carcinosin 200	Carcinosin 1000
पाँचवीं खुराक के 7 दिन बाद	छठी खुराक	Radium Brom CM	Radium Brom 1000	Radium Brom 200	Radium Brom 1000

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad